OM SHANTI MEDIA -FEB-II- 2022 MAHARASHTRA FINAL FILE_Layout 2 29-01-2023 10:51 Page 8

परमात्म ऊर्जा

अच्छा डबल निशाना कौन-सा है? जो डबल नशा होगा वही डबल निशाना होगा। एक है निराकारी निशाना। सदैव अपने को निराकारी देश के निवासी समझना और निराकारी स्थिति में स्थित रहना। साकार में रहते हुए अपने को निराकारी समझकर चलना। एक सोल कॉन्शियस व आत्म अभिमानी बनने का निशाना और दूसरा-निर्विकारी स्टेज, जिसमें मन्सा की भी निर्विकारीपन की स्टेज बनानी पड़ती है। तो एक है निराकारी निशाना और दूसरा है साकारी। तो निराकारी और निर्विकारी- यह हैं दो निशानी। सारा दिन पुरुषार्थ योगी और पवित्र बनने का करते हो ना! जब तक पूरी रीति आत्म अभिमानी न बनें तो निर्विकारी भी नहीं बन सकते। तो निर्विकारीपन का निशाना और निराकारीपन का निशाना, जिसको फरिश्ता कहो, कर्मातीत स्टेज कहो। लेकिन फरिश्ता भी तब बनेंगे जब कोई भी मन्सा संकल्प भी इम्प्युअर अर्थात् अपवित्रता का न हो, तब फरिश्तेपन की निशानी में टिक सकेंगे। तो यह डबल निशाना भी सदैव स्मृति में रखना और डबल प्राप्ति कौन-सी है? अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति, उसमें शान्ति और खुशी समाई हुई है। यह हुआ संगमयुग का वर्सा। अभी जो प्राप्ति है वह फिर कभी भी प्राप्त नहीं हो सकती। तो डबल प्राप्ति है बाप और वर्सा। बाप की प्राप्ति भी सारे कल्प में नहीं कर सकते। और बाप द्वारा अभी जो वर्सा मिलता है वह भी सारे कल्प के अन्दर अभी ही मिलता है। फिर कभी भी नहीं मिलेगा। इस समय की प्राप्ति 'अतीन्द्रिय सुख और फुल नॉलेज' फिर कभी भी नहीं मिल सकती। तो दो शब्दों में डबल प्राप्ति- बाप और वर्सा। इसमें नॉलेज भी आ जाती है तो अतीन्द्रिय सुख भी आ जाता है और रूहानी खुशी भी आ जाती। रूहानी शक्ति भी आ जाती है। तो यह है डबल प्राप्ति।

यह सभी दो-दो बातें धारण तब कर सकेंगे जब अपने को भी कम्बाइंड समझेंगे। एक बाप और दूसरा मैं, कम्बाइंड समझने से यह सभी दो-दो बातें सहज धारण हो सकती हैं। यह सभी जो दो-दो बातें सुनाईं वह अच्छी तरह से स्मृति-स्वरूप बनना। तो ज्ञानी हो लेकिन ज्ञान-स्वरूप बनना है। योगी हो लेकिन योगयुक्त, युक्तियुक्त बनना है। तपस्वी कुमार हो लेकिन त्यागमूर्त भी बनना है। त्यागमूर्त के बिना तपस्वी मूर्त बन नहीं सकते। तो तपस्वी हो लेकिन साथ-साथ त्यागमूर्त भी बनना है। ब्रह्माकुमार हो लेकिन ब्रह्माकुमार व ब्राह्मणों के कुल की मर्यादाओं को जानकर मर्यादा पुरुषोत्तम बनना है। ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम बनो जो आपके एक-एक संकल्प वायुमण्डल पर प्रभाव डालें। ऐसे पॉवरफुल बनना है। जो फुल होता है वह कभी फेल नहीं होता। फुल की निशानी है- एक तो फील नहीं करेंगे, दूसरा फेल नहीं होंगे और फ्लॉ नहीं होगा। तो फुल बनना है।

बहुत पाठ पढ़ा। पाठ ऐसा पक्का करना जो प्रैक्टिकल एक्टिविटी पाठ बन जाए। एक पाठ होता है मुख से पढ़ना, एक होता है सिखलाना। मुख से पढ़ाया जाता है, एक्ट से सिखाया जाता है। तो हर चलन एक-एक पाठ हो। जैसे पाठ पढ़ने से उन्नति को पाते हैं ना। इस रीति से आप सभी की एक-एक एक्ट ऐसा पाठ सभी को पढ़ायें व सिखलायें जो उन्नति को पाते जायें। पढ़ना भी है और पढ़ाना भी है। सप्ताह का कोर्स तो सभी ने कर लिया है ना! कोर्स का अर्थ ही है अपने में फोर्स भरना। अगर फोर्स नहीं भरा तो कोर्स भी क्या किया? निर्बल आत्मा से शक्तिशाली आत्मा बनने के लिए कोर्स कराया जाता है, तो अगर कोर्स का फोर्स नहीं है तो वह कोर्स हुआ?

कथा सरिता

वक्त कभी एक-सा नहीं रहता

यह कहानी एक खूबसूरत औरत की है जिनका नाम प्रभा देवी था। वह एक प्राइमरी स्कूल टीचर थी। यह बात 1960 के वक्त की है। जब देश में छुआछूत बुरी तरह छाया हुआ था। प्रभा देवी स्कूल पढ़ाने जाती थी, लेकिन उस स्कूल में आये बच्चों को हाथ नहीं लगाती थीं। यहाँ तक कि बच्चों को सख्त हिदायत थी कि वह मैडम से 1फीट दूरी से ही बात करें। उनकी किताबें तक को वह हाथ नहीं लगाती थीं।

स्कूल के अलावा उनके घर में भी कुछ इस ही तरह के नियम थे। साथ ही वह बहुत सुंदर थी और उन्हें सुन्दर दिखने वाली महिलाओं से दोस्ती करना पसंद था। साफ-सफाई से रहना प्रभा देवी को बहुत पसंद था। वो बिस्तर पर एक सल भी देखना पसंद नहीं करती थी। यहाँ तक कि छोटे-छोटे बच्चों को भी वो प्यार तो बहुत करती, उन्हें तोहफे देती, खाने की अच्छी-अच्छी चीज़ें देती। दिल से दुआ भी देती पर उन्हें कभी अपनी गोद में नहीं बैठाती थी और ना ही अपने बेड पर, क्योंकि उन्हें हमेशा बच्चे के गंद कर देने का डर होता था।

वक्त बीत गया जब प्रभा देवी की उम्र 70 वर्ष हुई। उनके पास उनकी एक बेटी रहती थी। अब प्रभा देवी को एक बहुत बुरी बीमारी हो गई थी। ना वो चल सकती थी ना किसी के सहारे के बिना एक करवट बदल सकती थीं। और उनका शरीर दुर्बल हो गया था, जिसे देख कोई भी डर जाए। उनकी बेटी उनकी पूरी सेवा करती पर फिर भी कई बार प्रभा देवी जी कई घंटों गंदगी में पड़ी रहती। जिन नौकरों से प्रभा देवी अपने आपको दूर रखती थी आज वो उनके सहारे के बिना एक पल नहीं रह सकती थी। प्रभा देवी दिल की बुरी नहीं थी पर जीवन में जिन बातों को लेकर वह सबसे ज़्यादा चिड़ती और अनजाने में ही सही पर दूसरों का दिल दुखाती थी बुढ़ापे में उन्हें इन बातों को जीना पड़ा।

सीख : वक्त कभी समान नहीं रहता वक्त के साथ सबकुछ बदल जाता है, लेकिन अपने व्यवहार को इस तरह रखें कि कभी भी वक्त के आगे आपको झुकना ना पड़े। कहते हैं इंसान जिस चीज़ से भागता है उसे उसका सामना करना पड़ता है इसलिए कभी किसी चीज़ से घृणा ना पालें।

न्याय हो तो ऐसा...

एक राजा था जिसका नाम था कर्णराज। कर्णराज न्याय प्रिय और बुद्धिमान राजा था। जो अपनी प्रजा के साथ न्याय करने के साथ-साथ उन्हें ज्ञान का उपदेश भी देता था। अपनी प्रजा को सही और गलत का भेद सीखाता था।

कर्णराज को वृक्षों से बहुत प्रेम था और वो अपनी प्रजा को मनुष्य, जानवर तथा वृक्षों में अहम संबंध हैं, इसका पाठ सीखाया करता था। वो हमेशा प्रजा से कहता था कि मनुष्य को पेड़-पौधों का रक्षण करना चाहिए और जानवरों का भी ध्यान रखना चाहिए।

एक बार एक ग्रामीण को अपने घर को बड़ा करना था और उसके इस काम में आँगन में लगा वृक्ष एक बहुत बड़ी बाधा था। उस ग्रामीण ने आम के हरे भरे वृक्ष को काट दिया, जब यह बात राजा कर्णराज को पता चली तो उसे बहुत दुःख हुआ और उसने सैनिकों को आदेश दिया कि वो उस ग्रामीण को दरबार में पेश करें।

अगले दिन उस ग्रामीण को दरबार में लाया गया। उस ग्रामीण ने राजा कर्णराज से माफी मांगी, अपने बच्चों की दुहाई दी कि उसे माफ कर दें। वो अगली बार ऐसा नहीं करेगा, लेकिन राजा ने एक न सुनी। राजा कर्णराज ग्रामीण को सज़ा देने का तह कर चुके थे। सभी के सामने राजा ने सजा सुनाई, राजा ने उस ग्रामीण से कहा कि तालाब के पास की जगह पर वो प्रति वर्ष 20 वृक्ष लगाये और उनकी देख-रेख करे और यह काम उसे 5वर्षों तक करना होगा, साथ ही सैनिकों को इस काम की निगरानी करने को कहा गया। उस वक्त तो सभी को यह सज़ा सही नहीं लगी,पर पाँच वर्षों के बाद जब तालाब के आस-पास का इलाका देखा गया तो वह हरा-भरा और काफी रोचक था इससे सभी को सीख मिली।

सीख : अगर इसी तरह वृक्ष लगा कर उनकी देख-रेख करें तो हम अपने आस-पास के परिवेश को सुन्दर बना सकते हैं।

छतरपुर-पेप्टेक टाउन(म.प्र.)। ब्रह्मा बाबा के 54वें पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में श्रद्धा सुमन अर्पित करने के पश्चात् समूह चित्र में अहमदाबाद से ब्र.कु. संगीता बहन, विश्वनाथ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रमा बहन तथा अन्य बहनें।